[इस प्रश्न पत्र में 03 मुद्रित पृष्ठ हैं]

हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवा संयुक्त प्रतियोगी (मुख्य / लिखित) परीक्षा, 2020

हिंदी साहित्य (पेपर-II)

निर्धारित समय: तीन घंटे अधिकत्तम अंक: 100

प्रश्न पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को कृपया सावधानीपूर्वक पढ़ें।

1. इसमें आठ प्रश्न हैं जो हिंदी में छपें हैं।
2. उम्मीदवार को कुल पांच प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देने हैं।
3. प्रश्न संख्या 1 अनिवार्य है। शेष सात प्रश्नों में से चार प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
4. सभी प्रश्नों के समान अंक हैं। प्रत्येक प्रश्न / भाग के नियत अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. सुपाठ्य लिखावट में उत्तर लिखें। प्रश्न के प्रत्येक भाग का उत्तर उसी क्रम में दिया जाना चाहिए।
6. प्रश्नों के प्रयासों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। आंशिक रूप से दिए गए प्रश्नों के उत्तर को भी मान्यता दी जाएगी यदि उसे काटा नहीं गया हो। छोड़े गए कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।
7. उम्मीदवार की उत्तरपुस्तिका का पुनर्मूल्यांकन / पुन: जाँच की अनुमति नहीं है।

---

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (10+10=20)

(क) पूरनता इन नयन न पूरी ।

तुम जो कहत स्रवननि सुनि समुझत, ये याही दुख मरत बिसूरी ।
हरि अंतर्यामी सब जानत बुद्धि बिचारत बचन समूरी ।
वै रस रूप रतन सागर निधि क्यों मनि पाय खवावत धूरी ।
रहु रे कुटिल, चपल, मधुलंपट, कितव सँदेस कहत कटु कूरी ।
कहँ मुनिध्यान कहाँ ब्रजयुवती ! कैसे जात कुलिस करि चूरी ।
देखु प्रगट सरिता, सागर, सर सीतल सुभग स्वाद रुचि रूरी ।
सूर स्वातिजल बसै जिय चातक चित लागत सब झूरी ।

अथवा

सुनो!
आज मैं तुम्हें वह सत्य बतलाता हूँ
जिसके आगे हर सचाई
छोटी है। इस दुनिया में
भूखे आदमी का सबसे बड़ा तर्क
रोटी है।
मगर तुम्हारी भूख और भाषा में
यदि सही दूरी नहीं है
तो तुम अपने-आपको आदमी मत कहो
क्योंकि पशुता—
सिर्फ़ पूँछ होने की मज़बूरी नहीं है
वह आदमी को भी वहीं ले जाती है
जहाँ भूख
सबसे पहले भाषा को खाती है

(ख) वह सामने कुसुमपुर है, जहाँ मेरे जीवन का प्रभात हुआ था। मेरे उस सरल हृदय में उत्कट इच्छा थी कि कोई भी सुन्दर मन मेरा साथी हो। प्रत्येक नवीन परिचय में उत्सुकता थी और उसके लिए मन में सर्वस्व लुटा देने की सन्नद्धता थी। परन्तु संसार — कठोर संसार ने सिखा दिया है कि तुम्हें परखना होगा। समझदारी आने पर यौवन चला जाता है — जब तक माला गूँथी जाती है, तब तक फूल कुम्हला जाते हैं। जिससे मिलने के सम्भार की इतनी धूम-धाम, सजावट, बनावट होती है, उसके आने तक मनुष्य हृदय को सुन्दर और उपयुक्त नहीं बनाए रह सकता। मनुष्य की चंचल स्थिति तब तक उस श्यामल कोमल हृदय को मरुभूमि बना देती है।

अथवा

जवानी जोश है, बल है, दया है, साहस है, आत्म-विश्वास है, गौरव है और वह सब कुछ जो जीवन को पवित्र, उज्ज्वल और पूर्ण बना देता है। जवानी का नशा घमंड है, निर्दयता है, स्वार्थ है, शेखी है, विषय-वासना है, कटुता है और वह सब कुछ जो जीवन को पशुता, विकार और पतन की ओर ले जाता है। चैनसिंह पर जवानी का नशा था। मुलिया के शीतल छींटों ने नशा उतार दिया, जैसे

उबलती हुई चाशनी में पानी के छींटे पड़ जाने से फेन मिट जाता है, मैल निकल जाता है और निर्मल, शुद्ध रस निकल आता है। जवानी का नशा जाता रहा, केवल जवानी रह गई ।

2. 'कबीरदास की साखियों में प्रिय से मिलने की तीव्र व्याकुलता' का सोदाहरण विवेचन कीजिए। (20)

3. "रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' में राम के शील-स्वभाव का उत्कर्ष है" — कथन का स्पष्टीकरण कीजिए। (20)

4. "अंधेर नगरी' अपनी समकालीन स्थितियों को व्यक्त करनेवाला श्रेष्ठ रूपक है" — समीक्षा कीजिए। (20)

5. "गोदान' अनेकविध शोषण-श्रृंखलाओं में बंधे किसान की त्रासद गाथा है" — कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। (20)

6. 'राम की शक्ति-पूजा' और 'सरोज-स्मृति' में निराला की अपनी मनःस्थिति और आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति किन रूपों में हुई है? (20)

7. "शेखर : एक जीवनी' में शेखर का विद्रोह अहं आधारित है" — तर्कसंगत पुष्टि कीजिए। (20)

8. "अँधेरे में' कविता में अनखोजी निज-समृद्धि के परम उत्कर्ष को नाटकीय रूप दिया गया है" — कथन का मूल्यांकन कीजिए। (20)

*****